(IJASSH) 2020, Vol. No. 10, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5150, p-ISSN: 2455-7722**

Different Voices of Condolences in Dr. Sarojini Aggarwal's "Shabd Kalash"

Dr Vinita Rani

Asso Professor, Hindi Department, K. G. K. College, Muradabad, U.P.

डॉ० सरोजिनी अग्रवाल के “शब्द कलश" में संवेदना के विविध स्वर

डॉ विनीता रानी

एसो. प्रोफेसर, हिन्दी विभाग

के.जी.के. महाविद्यालय, मुरादाबाद (उ.प्र.)

The creation of Dr. Sarojini Agarwal is diverse. There are colorful, beautiful and fragrant Sumans of many genres in her literature. As the author has repeatedly admitted in the roles of many of her texts that her writings have always been self-fulfilling, there has never been any sense of achievement of any kind of fame or meaning. Her words are - "My writing is synonymous with my identity and perhaps that is why my every creation has become a page of the diary. For me, every line of mine is a line of henna painted deep on the palm of my mind. All the works have been given so much brilliance that they easily excite the literary scholars.

डॉ. सरोजिनी अग्रवाल का सृजन विविधात्मक है। उनके साहित्योपवन में कई विधाओं के रंग-बिरंगे, सुन्दर व सुवासित सुमन हैं। जैसा कि लेखिका ने अपने कई ग्रंथों की भूमिकाओं में बार-बार स्वीकार किया है कि उनका लेखन सदैव स्वान्तः सुखाय ही रहा है, उसमें कभी किसी प्रकार के यश या अर्थ की प्राप्ति का भाव नहीं रहा। उनके शब्द हैं-"मेरी लेखनी मेरी अस्मिता का पर्याय है और शायद इसीलिए मेरी हर रचना डायरी का एक पृष्ठ बन गई है। मेरे लिए मेरी एक एक पंक्ति मेरे मन की हथेली पर गहरी रची मेंहदी की रंग रेखा है। उनकी इसी निश्छलता ने उनकी समस्त कृतियों को इतनी प्रभविष्णुता प्रदान की है कि वे सहज ही साहित्य मर्मज्ञों को आहलादित कर देती हैं उन सभी में अनुभूति और अभिव्यक्ति दोनों दृष्टि से ही कोई काल्पनिकता या अलंकारिता नहीं है।

डॉ. सरोजिनी अग्रवाल की सारी रचनायें इसी सदी के दूसरे दशक में प्रकाशित हुई हैं यद्यपि उन्होंने लिखना तो अपने अध्ययन काल में ही आरंभ कर दिया था। उनकी पुस्तकों में तीन कहानी संग्रह, पांच नाटक संग्रह, एक निबंध संग्रह तथा एक उनके शोध प्रबंध का संशोधित रूप है। ‘शब्द कलश' के अतिरिक्त उनका एक काव्य

(IJASSH) 2020, Vol. No. 10, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5150, p-ISSN: 2455-7722**

संकलन और है 'आओ, पढ़े पढ़ायें', इसमें साक्षरता अभियान और लड़की बचाओ, लड़की पढ़ाओं के राजकीय अभियान से जुड़ी सीधी सरल बोलचाल की भाषा में लिखी छोटी-छोटी कवितायें हैं। इसके साथ ही उनका एक अन्यकाशित काव्य संग्रह, शब्द-कलश-दूसरा भाग 'संवाद' भी है जिसमें उनकी कुछ नयी कवितायें, कुछ मुक्तक तथा गज़ल विधा में किए गए कुछ प्रयास है।

'शब्द कलश' का संवेदनात्मक मूल्यांकन करने से पूर्व कविता के स्वरूप और उसके मूल तत्व की चर्चा करना अनिवार्य है।

कविता का स्वरूप और उसका मूल तत्व -

आचार्य शुक्ल ने "ज्ञान-राशि के संचित कोश को साहित्य" की संज्ञा दी गई है। यह साहित्य दो प्रकार का है-एक बुद्धि प्रधान और दूसरा भावना प्रधान । पहले प्रकार का साहित्य सैद्धान्तिक है और तर्को-वितर्को द्वारा अपने निष्कर्ष प्रस्तुत करता है-इसे शास्त्र कहा गया। दूसरे प्रकार के साहित्य में हृदय तत्त्व प्रधान है। वह प्रेम, सौन्दर्य, भक्ति तथा अन्य रागात्मक अनुभूतियों के आश्रय से पल्लवित हुआ। इसे काव्य माना गया।

भारतीय विचारकों ने काव्य का विभाजन प्रायः तीन आधारों पर किया है-माध्यम, बंध व गुण। माध्यम के अनुसार काव्य के दो भेद निर्धारित किए गए-गद्य और पद्य । गद्य के अंतर्गत, कहानी, उपन्यास, निबंध, नाटक, जीवनी, संस्मरण, रेखाचित्र तथा यात्रावृतात आदि अनेक विधाओं को रखा गया। पद्य काव्य के बंध की दृष्टि से दो रूप हुए-प्रबंध और मुक्तक तथा गुण के आधार पर उनकी तीन कोटियाँ उत्तम, मध्यम तथा अद्यम निर्धारित की गई।

कविता के स्वरूप और उसके मूल तत्त्व के संदर्भ में भारतीय और पाश्चात्य मनीषियों ने पर्याप्त चिंतन किया है। उनके द्वारा दी गई कुछ परिभाषाओं का सार निम्नांकित हैं -

काव्य और कविता में कोई तात्त्विक भेद नहीं है। दोनों के मूल उपादान एक ही होते हैं। अन्तर केवल रूप में होता है। काव्य को जब छन्दों की श्रृंखलाओं में विधिवत बाँध दिया जाता है तभी उसे 'कविता' कहने लगते हैं। छंद विधान, वास्तव में कविता की सबसे प्रमुख विशेषता है।

अस्तु! समय-2 पर अंग्रेजी, संस्कृत, हिन्दी आदि-2 भाषाओं के विद्वानों, समीक्षकों, आचार्यों और साहित्यकारों ने अपनी-2 तरह से 'कविता' को परिभाषित किया है। कोई सर्वसम्मत परिभाषा आज तक नहीं बन पायी है। मेरी दृष्टि में 'कविता' अन्तर्मन का संगीत है जिसकी अभिव्यक्ति शाब्दिक होने पर और छंदात्मकता

(IJASSH) 2020, Vol. No. 10, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5150, p-ISSN: 2455-7722**

को ग्रहण कर लेने पर 'कविता' बन जाती है। वस्तुतः दुःख-सुख की अनुभूतियों की अभिव्यक्ति अपने अनुकूल शब्द एवं लय पाकर 'कविता' बन जाती है। जैसे कि पं. सुमित्रा नन्दन पंत जी ने कहा हैं -

"वियोगी होगा पहला कवि,

आह से उपजा होगा गान!

निकलकर ओठों से चुपचाप,

वही कविता होगी अनजान ।।

" अस्तु! 'कविता' को आज तक विविध साहित्यकारों एवं आलोचकों ने अपनी-2 रूचि एवं ज्ञान के अनुसार परिभाषित किया है। ऐसी असंख्य परिभाषाएं प्रस्तुत की जा सकती हैं।

काव्य के संदर्भ में दोनों वर्गों के विचारकों की अवधारणाओं में कतिपय अन्तर होते हुए भी दोनों ने काव्य को मानवीय भावनाओं और विचारों की अभिव्यक्ति का एक ऐसा सशक्त माध्यम माना है जो आनंद की सृष्टि करता है और जिसमें दूसरों से तादात्म्य स्थापित करने की अद्भुत क्षमता है। दोनों ने माना है कि कविता का मूल तत्त्व संवेदना है अर्थात् अपने साथ ही दूसरों के सुख-दुःख को अनुभव करने की क्षमता अपनी इसी सामर्थ्य से मनुष्य-मनुष्य से जुड़ता है और उससे एक रूप होता है। यह संवेदना ही है जो पाषाण में भी परम्परा के रूप को महसूस करती है और यह उसकी रागात्मकता ही है जो सारी सृष्टि में अपनेपन का भाव स्थापित करती है। इस संवेदना की सघनता इस बात पर आधारित है कि कवि और कविता का पारस्परिक संबंध क्या है? कैसा है?

कवि और कविता का संबंध -

स्वयं लेखिका ने लिखा है "कवि एवं कविता का संबंध सर्जक तथा सृजन का एक रागात्मक संबंध है। कवि का पहला गुण है सम्प्रक्ति। वह विशिष्ट व्यक्ति न होकर हममें से एक है, वह हमारी ही तरह समय का सहयात्री और समभागी है। उसकी यही उदार आत्मीयता उसे अपने सृजन के साथ एक नए संवेदनात्गक संबंध के धरातल पर प्रतिष्ठित करती है।

कविता की विकासात्मक प्रक्रिया इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि आदि काल से लेकर आधुनिक युग के विभिन्न चरणों गारतेदु युग, द्विवेदी युग, छायावादी, प्रगतिवादी, प्रयोगवादी और नयी कविता सभी युगों में परिस्थितियों के परिवर्तन के अनुसार कवि और कविता के आपसी रिश्तों में भी काफी बदलाव आये हैं।

(IJASSH) 2020, Vol. No. 10, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5150, p-ISSN: 2455-7722**

निष्कर्षतः अव कवि की भूमिका एक तटस्थ पर्यवेक्षक की नहीं है-वह अब वस्तुनिष्ठ भी नहीं है अव उसके शब्द उसकी अपनी निजी आंतरिक अनुभूतियों के संदेशवाहक भी बन गए हैं और उसकी लेखनी पंरपरागत शास्त्रीय बंधनों से पूर्ण मुक्ति का उद्घोष करने के साथ ही अनेक बंद वातायनों को भी खोल रही है-यह निश्चित ही स्वागत योग्य है।

"शब्द कलश" में कवयित्री की वैयक्तिक स्वीकृतियाँ -

डॉ. सरोजिनी अग्रवाल ने 'अपनी बात' में अपने इस कविता संकलन के अनुभूति और शिल्प दोनों पक्षों पर बड़ी ही सरलता से अपने मन को अनावृत्त किया है। उन्होंने लिखा है -

"शब्द-कलश" की अनुभूतियाँ किसी दिशा विशेष से नहीं जुड़ी है, इनमें अनेक रंग है, पर मुझे प्रायः ऐसा लगता है कि वे किसी न किसी बहाने मेरे हृदय को निरन्तर आन्दोलित करने वाले एक ही प्रश्न का उत्तर खोज रही हैं कि आज बह आदमी कहाँ गया जिसे परमात्मा ने अपनी तरह सच्चिदानंद स्वरूप बनाया था। आज उसकी सोच इतनी स्वार्थी कैसे हो गई कि वह अपने सारे संस्कारों और संबंधों को हानि-लाभ के तराजू पर तोलने लगा? क्या उसे यह भी याद नहीं रहा है कि आज वह जिस आत्मीयता की जड़ें इतनी निर्ममता से स्वयं काट रहा है कल उसी अपनेपन के लिए वह खुद तरसेगा।

अपने शिल्प के लिए भी उन्होंने निःसंकोच स्वीकार किया है- "मैं अच्छी तरह जानती हूँ कि शिल्प के मापदंड पर 'शब्द कलश' निर्दोष नही है। हर विधा का अपना एक निश्चित नियम-विधान होता है और मेरे लिए अपनी लेखनी को किसी नियमावली में बाँध पाना कभी संभव नहीं हुआ। मेरे लिए तो मेरी लेखनी का सृजन संसार स्वयं अपने आप से ही संवाद करने का अद्भुत आनंद लोक है। इस अलौकिक आत्म संतोष के समक्ष किसी लौकिक बंधन के लिए कोई अवकाश नहीं रहा।"

निष्कर्षतः अपने सृजन के साथ सर्जिका सदैव एक रूप रही है। उसकी स्थिति उस साधिका की तरह है जिसके रोम-रोम में एक ही दिव्य झंकृति रहती है वह बिल्कुल अपने आप में ही तल्लीन रहती है बिना किसी की अनुकूल या प्रतिकूल प्रतिक्रिया की चिंता किए हुए। सृजन के प्रति वह अनन्यता का भाव कवयित्री की अपनी विशेषता है।

"शब्द कलश" में संवेदना के विविध स्वर -

'शब्द कलश' मुक्तक काव्य है। हिन्दी के प्रसिद्ध आलोचक श्री रामचन्द्र शुक्ल ने प्रबंध को एक विस्तृत वनस्थली और मुक्तक को चुना हुआ गुलदस्ता मानकर उसे रसनिष्पत्ति करने में समर्थ माना है।

(IJASSH) 2020, Vol. No. 10, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5150, p-ISSN: 2455-7722**

'शब्द कलश' में कवयित्री के मन के सब रस है। जीवन में कभी-कभी कुछ हठीले क्षण सामने आ कर ऐसे अड़ जाते हैं कि उनकी बात सुने बिना निष्कृति नहीं होती ऐसे ही जिद्दी कालांशों की प्रतिक्रिया है "शब्द कलश" जिन कालांशों के समक्ष कवयित्री एक प्रकार से अपने को विवश पाती हैं उनमें से मुख्य हैं-

• आज के मनुष्य की जीवन-दृष्टि

• प्रेम, सौन्दर्य और प्रकृति के प्रति आसक्ति

• नारी की वेदनामयी नियति

• राष्ट्रीय गौरव की अभिव्यक्ति

• विविध कहने का तात्पर्य यह है कि जीवन के असीम विस्तार में कवयित्री ने मनुष्य, राष्ट्र, नारी और प्रेम तथा प्रकृति के प्रति ही अपने भावोदगार अधिक व्यक्त किए हैं।

आज मनुष्य की जीवन दृष्टि -

बदलते हुए समय के साथ बहुत सी चीज़ों के मापदंड परिवर्तित होते रहे हैं पर जहाँ तक मानवीय मूल्यों का प्रश्न है हमारी भारतीय संस्कृति में सदा से ही अर्थ (धन) और काम (वासना) से ऊपर धर्म को प्रतिष्ठित किया गया है। यही धर्म मानव और पशु का भेदक तत्त्व भी है। धर्म का मूल है प्रेम जो सृष्टि का संयोजक तत्त्व है और साथ ही वह दया, क्षमा, धैर्य व करूणा जैसी सभी सवृत्तियों का मूल आधार भी है। सच्चा प्रेम निर्व्याज होता है, लालसा और प्रतिदान की अपेक्षा से रहित। सच्चा प्रेम सिर्फ देता है, वह सदैव हितैषी होता है और उसका विस्तार व्यक्ति से लेकर विश्व तक है। प्रेम कण-कण में बिखर जाने वाल अमृत रस है, मानव में देवत्व की प्रतिष्ठा करने वाला तत्त्व है और अपने उदात्त रूप में वही भक्ति भी है।

प्रेम ही हमारी सारी संवेदनाओं का मूल स्रोत है पर आज मनुष्य ने प्रेम की उसी पवित्र भावना को कलुषित कर दिया है, उसे जोड़ने की जगह तोड़ने का कारण बना दिया है यानी अब वह अपने सारे पारिवारिक व सामाजिक संबंधों को व्यापार की की तरह हानि-लाभ के तराजू पर तोलने लगा है इसीलिए उसमें निश्छल अपनापन नहीं रहा है। अब उसकी जीवन-दृष्टि धर्ममयी न रहकर इतनी अधिक अर्थमयी और काममयी हो गई है कि वह एक प्रकार नर से नारायण न बनकर नरभक्षी हो गया है। अब उसने कछुए की तरह अपनी सारी संवेदनाओं को जैसे अपने ही अन्दर समेट लिया है वह पूरी तरह आत्मकेन्द्रित व स्वार्थी बन गया है। सर्वे भवन्तु सुखिनः या

(IJASSH) 2020, Vol. No. 10, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5150, p-ISSN: 2455-7722**

विश्वबंधुत्व जैसे मानवीय मूल्य उसकी दृष्टि में निष्प्रयोजन हो चुके हैं। अब तो जैसे वह एक निर्जीव यंत्र भर बनकर रहता है जो सब कुछ करता है पर महसूस कुछ नहीं करता।

आज के मनुष्य की यही संवेदनशून्यता कवयित्री के समक्ष बार-बार एक प्रश्न खड़ा कर देती है और वह निरंतर धरती से लेकर आकाश तक सबसे यही पूछती है -

"जंगलों में जो खड़ा था, रात में दिया लिए,

वह आदमी कहाँ गया? यही सबाल है,

शंख था, अजान था, बाइबिल कुरान था,

शब्द, शब्द था सबद, दीन था, ईमान था

बाँध कर कफन चला था, जो स्वराज्य के लिए

भारती का वंशधर लोक-संविधान था

सूलियों पे जो चढ़ा था, केसरी विदा लिए,

वह आदमी कहाँ गया? यही सवाल है।

चारों ओर फैली हुई रेगिस्तानी गर्म हवाओं के बीच में सावन की रसवंती बौछार को खोजती हुई कवयित्री के शब्द उसकी चिन्ता के दर्पण बन जाते हैं -

"कहाँ सुनहरी सूर्यमुखी है? गोरी रजनी गंधा?

हर मधुवन में उग आए हैं, ऊँचे हरे बबूल

तार-तार हो गई रेशमी,

चूनर सपनों की,

पात-पात झर गई महकती

मेंहदी अपनों की

कहाँ गुनगुनी धूप नेह की? घर की ठंडी छाया?

(IJASSH) 2020, Vol. No. 10, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5150, p-ISSN: 2455-7722**

हर चितवन में अंकुराये हैं, नागफनी के फूल'

जब-जब सर्जिका अपने चारों ओर दृष्टि डालती है तो देखती है कि अब तो आदमी और उसके संबंधों के अर्थ हो बिल्कुल बदल गए हैं। कहीं भी न आत्मीयता भरी वह छुअन है जो बिना बोले सारे घावों को चुपचाप सहला देती थी और न किसी आँख में वह नेह भरा आमंत्रण है जो दूर से ही गले लगा लेता था-आज तो ऑगन हो, प्रेम-पाती हो और या कोई संबोधन हो-सव केवल शब्द मात्र हो गए हैं, सारी संवेदनायें प्रथा और सारे ऑसू औपचारिकता बन गए हैं-दूर दूर तक भयानक अकेलापन और बनावटीपन है-कागज के फूलों की तरह सब कुछ नकली, सब कुछ दिखावटी -

संबंधों में गंध नहीं है अपनेपन की,

चन्दन-वन घिर गया कि जैसे नीम बबूलों से

या

आँगन तो हैं अब भी लेकिन,

अपनापन कहीं नहीं है,

संबंधों के आगे-पीछे,

कॉटे चुने हुए हैं,

संवादों में भी जैसे.

सन्नाटे बुने हुए हैं,

कैसी कैसी कूटनीतियों, सारी परिभाषायें बदलीं,

बंधन जन्म-मरण के लेकिन, अंतर्मन कहीं नहीं है

या

रिश्तों का रेगिस्तान

और प्यास है आदमी,

(IJASSH) 2020, Vol. No. 10, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5150, p-ISSN: 2455-7722**

इसी तरह सिर्फ नाम है आदमी और आह!। यह आदमी आदि-कविताओं में भी आदमी की विकृत सोच और उसके सर्वनाशी कृत्यों का बड़ी ही मार्मिकता से चित्रण किया गया है। भविष्य के विषय में निरन्तर चिंतन करती हुई लेखनी यही मंगल कामना करती है कि-

हर अँधेरा पियो, रोशनी के लिए,

आदमी बन जियो आदमी के लिए

सॉप से डॅस रहे हैं सपेरे यहाँ,

चाँद तारे बने हैं लुटेरे यहाँ,

एक ऑधी बड़ी, राह रोके खड़ी,

सूर्य ने बेच डाले सबेरे यहाँ

एक आवाज़ देता समय आज है,

तुम दिया बन जलो, भारती के लिए."

सवेंदना की यही स्वर आदमी तुम बनों में भी मुखरित है।

प्रेम, सौन्दर्य व प्रकृति के प्रति आसक्ति -

ये तीनों ही विषय कविता के प्रियतम विषय हैं और इनकी इन्द्र धनुषी छवियों को इतने रंग रूपों में अंकित किया गया है कि उनकी गणना तक करना संभव नहीं है पर सरोजिनी जी ने इनको केवल इस तरह छुआ है जैसे किसी विस्तृत वनस्थली में उड़ती तितली खिले अधखिले फूलों के पास से उनकी पंखुरियों को छूती हुई इधर से उधर चली जाती है। प्रेम सौन्दर्य और प्रकृति का सहज सात्विक रूप ही उन्हें सदा ग्राहय रहा है। उनकी पक्तियाँ हैं -

रूप मंगलाचरण प्रेम का

लेकिन अंतिम छंद नहीं है,

दीप-शिखा-सी देह ज्योति पर

(IJASSH) 2020, Vol. No. 10, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5150, p-ISSN: 2455-7722**

विश्वशलभ बन जलता आया,

सोनजुही से हेम रंग पर

मुग्ध स्वयं आमरण पंथ का,

बस केवल सौगन्ध नहीं है।

नारी सौन्दर्य के मांसल या उत्तेजक रूप के चित्रण में उनकी कोई रुचि नहीं है। वे तो उसकी देह की जन्मजात वासंती सुषमा की ही सराहना करती हैं –

तुमने खोले हैं केश कि बादल घिर आये?

ये चाँदी से राजंहस

आये हैं उड़कर,

या हँस उठीं अनायास

तुम पीछे मुड़कर

तुमने बदले हैं वेश कि इन्द्रधनुष छाये

'शब्द-कलश' में प्रकृति के कई रंग हैं विशेषतया फागुन और सावन के-

"मन के कोरे कागज पर लिख गया प्रणय के छंद

छबीला फागुन

कस्तूरी-सी देह हो गई,

भुवनमोहिनी चितवन,

अंग-अंग छाया अनंग है

रोम-रोम रति दर्पन,

तन की क्वांरी केसर का, कर गया सुनहरा रंग

(IJASSH) 2020, Vol. No. 10, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5150, p-ISSN: 2455-7722**

रंगीला फागुन

या पावस की छटा देखिए

"ये मदन छंद से मेघ कि नभ से रस बरसे,

देह हुई कस्तूरी मृग-सी

काम गंध से चंचल,

प्राण कि जैसे सूखे वन में,

दहक उठे दावानल,

ये इन्द्रधनुष के रंग कि नभ से विष बरसे '

ओ नीलकंठ बादल' ये सावन के मेघ, फागुन मेरे लिए मधु वंसत छाया है, यह धूल भरा मौसम और तुमने मेरा क्वॉरा मन क्यों छुआ? में भी इन्हीं अनुभूतियाँ की आकर्षक रंगोली सजी हुई है।

नारी की वेदनामयी नियति -

सरोजिनी जी के हृदय को सर्वाधिक झकझोरा है नारी की निरीहता ने। पुरुषों की सामंतवादी सोच के कारण अनेक लक्ष्मण रेखाओं में बन्दिनी बनी, अकारण बारबार अग्नि परीक्षायें देती, कठोर विषपान करती, वस्तु की भांति बलात वशीभूत की जाती, अपने आत्मजों (संतानो) द्वारा अकेलेपन की भयानक यंत्रणाओं को झेलने के लिए विवश की जाती और इन सब अमानवीय अत्याचारों के साथ ही जन्म लेने के अधिकार से भी वंचित की जाती नारी की वेदनामयी नियति उनकी कई कविताओं में बड़ी ही मार्मिकता से व्यक्त की गई है। उनकी संवेदना के स्वर कहीं सौम्य हैं और कहीं उग्र। कभी-कभी तो उनक अन्तर्जात आक्रोश इतना अधिक प्रखर हो गया है वह पुरुष प्रधान समाज के साथ ही सीधे विधाता से भी प्रश्न करने को तत्पर हो गया है। नही झरेगी शेफाली में बलात्कार के प्रति उनके क्रोध का ज्वार जैसे सारी सीमायें ही लॉघ गया है-

"आखिर कब तक/व्यक्ति को वस्तु बनाने के /ये नारी भक्षी षडयंत्र/ऐसे ही चलते रहेंगे/और नपुंसकों की तरह/ देखता रहेगा समय/और समय का स्रष्टा भी?/आखिर कब तक? आखिर कब तक?'5.

(IJASSH) 2020, Vol. No. 10, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5150, p-ISSN: 2455-7722**

उनके अंदर की यही ज्वाला उस समय भी सारी सामाजिक संरचना को भस्मीभूत कर देना चाहती है जब भ्रूण हत्या का कोई निर्णय लिया जाता है। वे ऐसे निर्णायकों को अपनी पूरी ताकत से धिक्कारती हैं और उन्हें अमानुष तक कहती हैं-

"आखिर इतने क्रूर कैसे हो गए तुम? कि करने लगे हो हत्यायें/अपने ही ऑगन की/अजन्मी मधुमती कविताओं की/क्यों? आखिर क्यों?

क्या हो गया है तुम दोनों को? तुम अजन्मी कल्पनाओं की नहीं। अपनी हत्या कर रहे हो/आगे आने वाली सदी/तुम्हें कभी क्षमा नहीं करेगी/इस अमानवीय कृत्य के लिए/कभी नहीं।

उनकी संवेदना का यह प्रलयंकारी स्वर उस समय बड़ा ही संयत और शांत हो जाता है जब अकेलापन का भीषण दर्द चुपचाप झेलती माँ अपनी व्यथा-कथा अपने कोरव जाये बेटो से कहती हैं-

"हमें तुम्हारा पूरा दिन नहीं/ केवल दो चार पल चाहिए/घर से जाते-जाते समय रोज/हमारे कमरे में झॉक लिया करना/बस इतना ही बहुत है/हमारे लिए।

"तुम परेशान मत होना वेटे। बच्चों से कहना पत्र लिखते रहेंगे हमें। बनाये रखेंगे हमारा यह विश्वास कि तुम सब दूर रहकर भी हमारे पास हो। बस इतना ही बहुत है। हमारे लिए।"

उन्होंने नारी की पीड़ा का चित्रण करने के साथ उसे उसकी असीम शक्ति के प्रति आश्वस्त भी किया है और अपनी इस अस्मिता के महासमर के लिए एकजुट होने का सशक्त आह्वान भी किया है। उन्होंने पूर्ण विश्वास से यह घोषणा की है कि नारी ही सृष्टिकर्ता सदाशिव की संजीवनी शक्ति है इसके बिना शिव मात्र रह जाते हैं। अतः उसे अपनी विजय के लिए केवल और केवल अपनी अन्तर्निहित शक्ति को संचित करना मात्र है। उसे अपनी विजय के लिए कोई वैसाखी नहीं चाहिए।

'मीरा', 'आओ प्रणाम करे', 'साध्य कामना', 'एक प्रश्न नारी से' आदि कवितायें भी नारी नियति की ही प्रतिच्छाये हैं।

राष्ट्रीय गौरव की अभिव्यक्ति –

नारी के स्वयंसिद्ध होने पर सरोजिनी जी को जितना अगाध विश्वास है उतनी ही गहराई से वे अपने राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य के प्रति पूर्ण विश्वस्त हैं। इसमें उन्हें कोई संदेह नहीं है कि एक दिन ऐसा आयेगा जब हम पुनः अपने भारतीय जीवनमूल्यों और गांधीवादी आदर्शों को अपना कर अपने देश को विश्वगुरु के पद पर प्रतिष्ठित

(IJASSH) 2020, Vol. No. 10, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5150, p-ISSN: 2455-7722**

करेंगे। उन्हें अपने राष्ट्र की हर वस्तु पर चाहे वह हिन्दी भाषा हो चाहे वह अपना तिरंगा ध्वज हो, चाहे वे युग पुरुष महात्मा गांधी हो और चाहे स्वतंत्रता का 15 अगस्त और गणतंत्र का 26 जनवरी का पावन दिवस हो। उनकी लेखनी ने उत्साहपूर्वक सबका अभिनंदन किया है और पूरे हृदय से राष्ट्र वंदना की हैं-

मुक्ति का पर्व है आत्ममंथन करो

स्वर्ग का रूप भू पर संवर जायेगा,

सूक्ति सी यह धरा, मंत्र सा है गगन,

रत्न का सिंधु है, स्वर्ण से हैं सुमन,

मेघ से झर रही हैं ऋचायें यहाँ,

गंध के काव्य सा मोद भरता पवन,

क्रांति के प्रश्न का पार्थ उत्तर बनो,

देश का कर्ज़ शायद उतर जायेगा।।

वे अपने देश की प्राकृतिक सुषमा को विविधता में भरी उसकी एकता को और उसकी माटी की अपूर्व गरिमा को शत-शत प्रणाम करती है। उनकी दृष्टि में धर्मान्धता, साम्प्रदायिकता व स्वार्थपरता तथा देश को सर्वोच्च न मानने की हठवादिता ही हमारी स्वतंत्रता के लिए सबसे अधिक घातक है और ऐसे देशद्रोही तत्त्वों के प्रति वे बार-बार सबको सचेत करती हैं और उनको अपने गौरवपूर्ण अतीत की याद दिला कर देश के लिए सर्वस्व बलिदान करने का आमंत्रण देती हैं। वे बार-बार एक ही प्रश्न पूछती हैं-

"किसने बंद किए वातायन, बंदी किसने की है गंध?

कौन लिख रहा चंदन-वन में देखो नागफनी के छंद?

किसने यह दीवार उठाई? किसने छिपकर बोये कॉटे?

कौन कह रहा मज़हब को फिर नफरत का अनुबंध?"

(IJASSH) 2020, Vol. No. 10, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5150, p-ISSN: 2455-7722**

वे राष्ट्र कल्याण के लिए प्रस्तुत परिवार नियोजन, नारी शिक्षा जैसी राजकीय योजनाओं का सशक्त समर्थन करती हैं और बार बार नारी शक्ति को आवाज़ देती हैं, उन्हें देशभक्तों के प्रसंग सुनाती हैं और उन्हें नवनिर्माण का संकल्प दिलाती हैं -

"एक एक रत्ना, सीता, श्रद्धा-सी तुम

कंचन भविष्य का वचन भरो,

देश अर्थ है, जन्म शब्द है,

लेकिन जन मन जीवन से ही, राष्ट्र सॅवरता है

वे प्रायः देश की दुर्दशा से दुःखी होती हैं पर उसकी प्रगति के प्रति प्रयत्नशील रहती हैं और अपनी लेखनी को राष्ट्रीय जागरण के अस्त्र के रूप में प्रयोग करती हैं। राष्ट्रीय गौरव से जुड़ी उनकी सभी छंदात्मक और मुक्त छंदात्मक कविताओं में मुक्ति का पर्व देश विश्वास है। उठो चलो, चंदन-सी यह माटी अपने इस देश में तथा हिन्दी हमारी राष्ट्र भाषा है, में उनकी देशभक्ति की भावना अपने सहज रूप में व्यक्त हुई है। उनकी संवेदना सचुमच राष्ट्रीय सुख-दुःख से जुड़ी हैं उसमें कोरी राष्ट्र योजना मात्र नहीं है। वे सिर्फ नारेबाजी नहीं करती हैं और न ही झूठे सपने दिखाकर अपने देशवासियों को दिमित करती हैं-उनकी वास्तव में यही चेष्टा रही है कि वे अपने शब्दों की शलाकाओं से एक बार फिर से बुझी हुई राष्ट्रीय गौरव की शीतल पड़ी अग्नि ज्वालामुखी बना सकें।

उपर्युक्त सभी विषयों पर लिखी काव्य पंक्तियों में उनकी संवेदना के विविध स्वर मुखरित हैं। इसके अतिरिक्त उन्होंने जीवन-गृत्यु, अकेलापन, सांध्यकामना तथा कुछ अन्य अनेक अनुभूतियों को भी छुआ है। निष्कर्षतः उनकी हर कविता समुद्र के तट पर बिखरी हुई सीपियों की तरह हैं पर उनकी संवेदना का स्पर्श उन सवकों उसी तरह रमणीय बना देता है जैसे चन्द्रमा की किरने विविध आकार प्रकार की सीपियों को प्रभामंडित कर देती हैं।

शब्द कलश का शिल्प -

कवयित्री ने स्वयं अपनी बात को इस संदर्भ में स्पष्ट किया है-

"शब्द-कलश" में मेरी संवेदनाओं ने कई रूपाकार ग्रहण किए हैं जैसे गीत, तुकांत-अतुकांत कविता. मुक्तक, गजल, हाइकू (जापानी छंद) व क्षणिकायें आदि। मैंने वार-बार यह अनुभव किया है कि हर अनुभूति का अपना एक नैसर्गिक स्वभाव होता है और उसे कोई भी लेखनी अपनी इच्छा से किसी विशेष विधा में नहीं बाँध

(IJASSH) 2020, Vol. No. 10, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5150, p-ISSN: 2455-7722**

सकती, यदि वह ऐसा दुराग्रह करती है तो भावनाओं का सहज प्रवाह अप्रतिहत न रहकर खंडित लहरों की तरह अपनी पूरी वात कहे बिना बीच में ही विलीन हो जाता है।

मेरी दृष्टि से हर संवेदना को अपना शिल्प स्वयं निश्चित करने के लिए मुक्त छोड़ देना चाहिए। तभी वे अपनी सघन वृत्ति और विस्तृति को एक साथ बनाये रख सकती हैं। सरल चित्त में त्रिभंगीलाल को बिठाने की हठवादिता हास्यास्पद ही सिद्ध होती है।

सरोजिनी अग्रवाल ने अपनी इस कृति का मूल्यांकन जिन शब्दों में किया है उन्हीं को अंत में उद्धृत कर देना मुझे रागीचीन प्रतीत हो रहा है। सृजनकर्ता की रवीकृति से अधिक सत्य कुछ हो ही नहीं सकता। कवयित्री ने लिखा है-

"अनुभूति और अभिव्यंजना दोनों ही दृष्टियों रो 'शब्द कलश' की कवितायें छत की मुंडेर पर अपने आप उग आई छोटी-बड़ी हरी-गरी दूर्वायें ही हैं और अनावश्यक रूप से इन्हें मैंने कभी काटा-छाँटा भी नहीं है। काव्य के गापदंड पर से सुगढ़ है या अनगढ़-यह मेरी चिंता का विषय कभी नहीं रहा-इनका अपनापन ही इनकी सार्थकता है मेरे लिए"

अपने शोध-पत्र का समापन उन्हीं की पंक्तियों से करने का लोभ रांवरण नहीं कर पा रही हूँ इसीलिए जिन्दगी कविता का एक छंद प्रस्तुत हैं -

"हर समय है एक मज़बूरी घुटन,

आदमी है एक मछली जाल की,

रोज़ लड़ता है अकेले वक्त से

घाव-सी है डायरी, हर साल की,

एक चेहरा सुबह का, एक चेहरा शाम का

एक अंतिम मरण का अभ्यास है यह ज़िन्दगी,

उपर्युक्त विवेचन एवं विश्लेषण से स्पष्ट है कि डॉ. सरोजिनी अग्रवाल एक असाधारण रचनाकार हैं। उनके काव्य में समसमायिक सन्दर्भो का सुन्दर चित्रण हुआ है। उनकी संवेदना के विविध आयाम हैं।

संदर्भ

(IJASSH) 2020, Vol. No. 10, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5150, p-ISSN: 2455-7722**

1. डॉ. सरोजिनी अग्रवाल, 'शब्द कलश' (अपनी बात) से साभार

2. डॉ. गोविन्द शरण त्रिगुणायत, शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धान्त, भाग-2, पृ. 1

3. डॉ. सरोजिनी अग्रवाल, वाग्धारा, पृ. 54

4. डॉ. सरोजिनी अग्रवाल, शब्द कलश (अपनी बात) से साभार

5. उपरिवत्,

6. उपरिवत्, शब्द कलश, पृ. 25

7. उपरिवत्, शब्द कलश, पृ. 18

REFERENCES

1. Dr. Sarojini Agarwal, courtesy of 'Shabd Kalash' (own talk)

2. Dr. Govind Sharan Trigunayat, Principles of Classical Review, Part-2, p. 1

3. Dr. Sarojini Agarwal, Vagdhara, p. 54

4. Dr. Sarojini Aggarwal, courtesy of the Shabd Kalash (own talk)

5. Ibid.

6. Ibid, Shabad Kalash, p. 25

7. Ibid, Shabd Kalash, p. 18